ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 30-33
I S S N NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

ग्रेट ब्रिटेन में भूगोल का विकास

महेन्द्र प्रताप सिंह
एसोसिएट प्रोफसर, सकलडीहा पी0जी0 कालेज सकलडीहा, चन्दौली (उ0प्र0) भारत

Received- 06.06. 2019, Revised- 10.06. 2019, Accepted - 15.06.2019 E-mail: sagarprinting786@gmail.com

सारांश : *ब्रिटेन में भी सुंयक्त राज्य अमेरिका की भांति भूगोल विकास विलम्ब से हुआ। 1884 तक भूगोल की पढ़ाई स्कूल स्तर तक ही होती थी । यहां विद्यालय की कक्षाओं में एक दीवाल मानचित्र टंगा रहता था जिसमें ब्रिटिश सामाज्य वाले क्षेत्रों का गुलाबी रंग से प्रदर्शित किया गया होता था । उस समय कक्षाओं में पढ़ाया जाने वाला भूगोल वर्तमान भूगोल से बहुत भिन्न था। उस समय नगरों, राजधानियों, नदियों आदि तत्वों को कक्षा में पढ़ाया जाता था । साथ ही ब्रिटेन से निर्यात की जाने वाली वस्तुओं के बारे में सामान्य जानकारी दी जाती थी । निचले स्तर के विद्यालयों में भूगोल एक विषय के रूप में था किन्तु उसकी पढ़ाई क्रमबद्ध तरीके से नहीं होती थी । भूगोल को एक संसंगठित विषय के रूप में विकसित होने में देर लगी । कारण यह था कि भूगोल के बारे में अभी दृष्टिकोण स्पष्ट नहीं हो पाया था। कुछ लोग इसे अन्य विषयों से संकलित अध्ययन वस्तु वाला पाठ्यक्रम मानते थे । अभी यह वह दौर था कि जब यह बहस छिड़ी हुई थी कि भूगोल क्या है ? और भूगोल के अध्यापको का क्या पढ़ाना चाहिए । इसी समय लेडी समर विले (26 दिसम्बर 1780–28 नवम्बर 1872) ब्रिटेन के ज्ञान जगत में एक ऐसे व्यक्तित्व के रूप में उमड़ी कि जिन्होंने न केवल भूगोल बल्कि विज्ञान, गणित व खगोल विज्ञान में महत्वपूर्ण कार्य किये ।*

कुंजी शब्द – दीवाल मानचित्र, हतोत्साहित, वायुमण्डल, परिवर्तनकारी शक्ति, विध्वसंक, संकलित अध्ययन।

वह कैरोलीन हर्सल के बाद दूसरी महिला थी जिन्होंने भूगोल, गणित व विज्ञान जैसे विषयों में अपने को स्थापित किया । इस समय ब्रिटेन में महिलाओं को विज्ञान पढ़ने हेतु हतोत्साहित किया जाता था । इनकी भूगोल में भौतिक भूगोल (Physical Geography) नामक पुस्तक बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुई। इस पुस्तक में महाद्वीप, महासागर, वायुमण्डल, वनस्पति व जीव–जगत का विवरण दिया गया है । पुस्तक प्रकृति और मानव को समान महत्व देते हुए मनुष्य को एक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में स्वीकार किया है तथा उसके अर्थात् मानव के विध्वसंक कार्यो के प्रति चिन्ता भी व्यक्त की गई है। इनकी 'भौतिक भूगोल' की पुस्तक को उत्कृश्ट मानते हुए 'रायल ज्योग्राफिकल सोसाइटी' ने इन्हें 1869 में विक्टोरिया स्वर्ण पद से सम्मनित किया। इनकी यह पुस्तक कई दशाओं तक ब्रिटेन के भूगोल जगत में मानक पुस्तक के रूप में स्वीकार की गई। इतना सब कुछ होते हुए भी सोमर विले कोई नया वैचारिक दृष्टि प्रस्तुत नहीं कर सकीं । फिर भी भूगोल के विकास में इनका महत्वपूर्ण योगदान है। सोमर विले के पश्चात् हक्सले की पुस्तक 'भूस्वरूप' (Physiography) (1877), मिल की

पुस्तक प्राकृतिक साम्राज्य : भूस्वरूप की रूपरेखा (1802) : फ्रीमैन की पुस्तक 'आधुनिक ब्रिटिष भूगोल का इतिहास (A Histoty of Moderns British Geography 1880) प्रकाशित हुई । ये सभी पुस्तक भूगोल के विकास और विषय दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस काल के एक दूसरे महत्वपूर्ण भूगोल वेत्ता पैट्रिकमिडिस (1814-1934) हुए जो मानव–जीवन पर वातावरण के प्रभाव को सिद्ध किया ।

ये स्थलाकृति, जलवायु तथा अन्य प्राकृतिक संसाधन तथा मानव समुदायों के वितरण, आर्थिक क्रियायें और सामाजिक–सांस्कृतिक स्वरूप के मध्य कार्य कारण सम्बन्ध होने की बात स्वीकार करते है। गिडिस ने क्षेत्र सर्वक्षण को बहुत महत्व दिया उनका नारा था 'पहले सर्वेक्षण फिर कार्य' अर्थात् सर्वेक्षण के बिना भौगोलिक अध्ययन पूरा नहीं हो सकता । गिडिस ने घाटी पार्श्विका द्वारा समुद्रतट से लेकर पर्वत शिखर तक बदलते भौगोलिक परिवेश के साथ मानव परिवर्तनशील जीवन यापन के ढंग को प्रदर्शित किया है । 1884 में केल्टी के रिर्पोट में कहा गया कि यूरोप और अमेरिका की तुलना में ब्रिटेन में भूगोल की स्थिति बहुत खराब है । इसके बाद क्रैम्ब्रिज व आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में भूगोलवेत्ताओं की नियुक्ति की गई।

1887 में प्रथम बार आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में मैकिन्डर की नियुक्त की भूगोल के रीडर पद हुई । इसी समय से ब्रिटेन आधुनिक भूगोल का शुभारम्भ माना जाता है ।

एच.जे.मैकिन्डर (1861– 1947)– मैकिन्डर एक ब्रिटिश भूगोलवेत्ता थे भूगोल और भू–राजनीतिक के संस्थापक सदस्यों में की जाती हैं । इनका जन्म इंग्लैण्ड के गानिसवर्ग में हुआ था । ये डाक्टर पिता के संतान थे । इनकी शिक्षा

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

गानिसवर्ग के क्वीन एलिजावेथ ग्रामर स्कूल में हुई । इन्होंने आक्फोर्ड में प्रकृति विज्ञान की शिक्षा आरम्भ की और हेनरी नाटिल मोसले जो चैलेन्जर अभियान में प्रकृति विज्ञानी रह चुके थे, के निर्देशन में जन्तु विज्ञान में विषेशता हासिल की । वे मानव के विकास में विकासवाद के सिद्धान्त की अवधारणा से सहमत थे । उनके अनुसार *When the turned to study of history, he remerbed that he was returring to an old interest and look of modern history with the idea of seeing how the theory of evolution would appear in human development'og भौतिक भूगोल और मानव भूगोल दोनों को एक ही विषय के रूप में स्वीकार करने के प्रबल समर्थक थे । मैकिन्डर 1883 में आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के यूनियन के अध्यक्ष भी थे । 1887 में उनकी पुस्तक "On the scope and methods of Geography" प्रकाशित हुई और इसके कुछ ही महिने पश्चात् आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में भूगोल के रीडर नियुक्त हुए । उस समय इनकी आयु मात्र 28 वर्ष थी । अपनी नियुक्ति पर इन्होंने कहा 'Aplateform has been given to geographer" 1892 में विश्वविद्यालय रीडिंग एक्सटेन्शान कालेज के प्रिंसिपल नियुक्त हुए जहां वे 1903 तक रहे । यह कालेज बाद में रीडिंग विश्वविद्यालय बन गया । जब 1893 में 'भूगोल संघ' की स्थापना हुई तो वे संघ के संस्थापकों में से एक थे । यह संघ स्कूलों में भूगोल के अध्यापन को प्रोत्साहित करना था । बाद में वे इस भौगोलिक संघ' के चेयरमैन बने । यह लन्दन स्केल ऑफ इकोनामिक्स' के संस्थापक सदस्यों में भी एक थे । ये भूगोल के 'स्कूल आफ ज्योग्राफी' के निर्माण में प्रेरक तत्व के रूप में थे । 1899 में इन्होंने केन्या पर्वत शिखर पर चढ़ने वाले अभियान दल का नेतृत्व भी किया था । 1904 में मैकिन्डर रायल ज्योग्राफिकल सोसायटी' के सम्मुख 'The Geographycal Pivot of History'नामक प्रपत्र पढ़ा। जिसमें इन्होंने 'हृदयस्थल सिद्धान्त' की संकल्पना को प्रस्तुत किया था । इस सिद्धान्त को प्रायः भू–राजनीतिक की स्थापना माना जाता है । ये 1903–1908 तक 'लन्दन स्कूल आफ इकोनामिक्स' के डायरेक्टर थे । जनवारी 1910 में ब्रिटिष संसद के सदस्य भी चुने गये । 1991 में वह रूस में ब्रिटिष राजदूत भी बने । इस प्रकार मैकिन्डर एक राजनीतिज्ञ भूगोलवेत्ता थे । जो भूगोल के साथ–साथ भू–राजनीतिक के विकास में भी अमूल्य योगदान पहुँचाया ।

कृतियॉ–

1. भूगोल का विशय क्षेत्र एवं विधियॉ–

On the scopw and Method of Geography : Proceading of the Royal Geographical society and Methly Record of Geography, New Monthly Series. Vol.9 No.3 (Merch 1887) P.P. 147-174. 2. ब्रिटेन एवं ब्रिटिष समुद्र–Britain and British seas (1902) 3. इतिहास का भौगोलिक धुरी ('The Geographical Pivot of History The Geographic' Journal 1904, 23, P.P. 421-437 4. प्रजातांत्रिक आदर्ष एवं वास्तविकतायें - Democratic I deals and Reality (1905) 5. मानव षक्ति, राश्ट्र एवं साम्राज्य के षक्ति के मापन के रूप में–Main Power as a measurs of National and Impperial Strength (1905). 6. भूगोल और इतिहास : Geography and History (1905) 7. अपना विष्वद्वीप–भूगोल में तात्विक अध्ययन : Our own Islands an elementary study in Geography.

संकल्पनायें– मैकिन्डर एक भूगोलवेत्ता के साथ राजनेता और डिप्लोमेंट भी थे । उनकी भूगोल के साथ–साथ राजनीतिक घटनाओं के भौगोलिक अध्ययन में भी गहन रूचि थी वे ब्रिटिश साम्राज्य की सुरक्षा के प्रति सदैव चिन्तनशील रहे । अतः उन्होंने तत्कालीन राजनैतिक परिदृश्य की व्याख्या भौगोलिक दृष्टि से की । यहीं से भू–राजनीतिक की शुरूआत मानी जाती है । इस सन्दर्भ में इनकी हृदयस्थल की संकल्पना का विशेष महत्व है ।

1.हृदयस्थल की संकल्पना– मैकिन्डर 1904 में 'रायल ज्योग्राफिकल सोसाइटी' के सम्मुख 'इतिहास की भौगोलिक धुरी' (Geographical Pivot of History) नाम से एक शोध पत्र प्रस्तुत किया जिसमें इन्होंने हृदय स्थल सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था । उस समय इस पर लोगों ने विशेष ध्यान नहीं दिया । किन्तु जब 1919 में 'प्रजातांत्रिक आदर्श एवं वास्तविकतायें' (Democratic ideals and Reality) सिद्धान्त का पुनः विवेचन किया तो लोगों का ध्यान इस तरफ गया ।

मैकिन्डर के 'हृदय स्थल सिद्धान्त' का मूल बिन्दु पृथ्वी के भौगोलिक विस्तार एवं स्थिति पर आधारित है । इनके अनुसार पृथ्वी दो भागों में विभाजित है । प्रथम–विश्वद्वीप है जिसमें यूरेशिया एवं अफ्रीका सम्मिलित है। दूसरा परिधीय या तटवर्ती क्षेत्र है । जिसमें अमेरिका, आस्ट्रेलिया, जापान, ब्रिटेन व ओसीनिया सम्मिलित है । यह विश्वद्वीप की अपेक्षा छोटा है और निशिचित रूप से समुद्री शक्ति पर निर्भर है । विश्वद्वीप के पास अधिक प्राकृतिक सम्पदा और विकास की असीम संम्भावनायें हैं। इसके बाहर पश्चिमी यूरोप एवं मानसून एशिया के धनी आबादी वाले क्षेत्र है। हृदय स्थल से बाहर की ओर बार–बार सफल आक्रमण होते रहे है । ऐसे आक्रमण द0पू0 अर्थात् मानसून एशिया की ओर, दूसरा उत्तर–पूर्व अर्थात् पूर्वी साइवेरिया, अलास्का व अमेरिका की ओर तथा तीसरा पश्चिम व द0प0 की ओर अर्थात् पश्चिमी दक्षिणी यूरोप, व

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

भूमध्य सागरीय तट की ओर रहा ।

मैकिन्डर ने सूक्ष्म रूप से इसे निम्न प्रकार से कहा है–

Who rules east Europe, commands the Heartland. Who rules the Heartland commands the world Island. Who rules orld Island commands the worlds.tks पूर्वी यूरोप पर शासन करता है उसका अधिकार ह्रदय स्थान पर है जो ह्रदय स्थल पर शासन करता है उसका अधिकार विश्वद्वीप पर शासन करता है उसका अधिकार विश्व पर है ।

संक्षेप में कहा जाये तो मैकिन्डर ने थलीय और समुद्री शक्तियों के तुलनात्मक महत्व को रेखांकित किया था । चूंकि सम्पूर्ण पृथ्वी खोजी जा चुकी है और उसके प्रत्येक हिस्से पर किसी न किसी का अधिकार है । अतः यूरोपीय शक्तियों को नए क्षेत्रों को खेजने व उस पर अधिकार करने के लिए कोई स्थान बचा नहीं है । अतः अब थलीय और समुद्री शक्तियां वर्चस्व के लिए संघर्ष करेंगी और विजेता विश्व साम्राज्य स्थापित करने की स्थिति में होगा । इस सन्दर्भ में भौगोलिक दशायें ही निर्णायक भूमिका निभायेगी । मैकिन्डर के अनुसार 'Man and not nature initiates, but nature in large measure contrals.Ok`gn स्तर पर भौगोलिक दशायें ही ग्लोब पर संघर्ष का क्षेत्र तय करती है । विजय और पराजय धुराग्रक्षेत्र (Pivot Area) अर्थात् विश्वद्वीप ह्रदयस्थल पर नियंत्रण से ही निश्चित होगा ।

मैकिन्डर का यह सिद्धान्त अल्फ्रेडथेयर महान के Sea Power विचारधारा के विलकुल विपरीत है जिसमें उन्होंने सामुद्रिक शक्ति की श्रेष्ठता को दर्शाया है । महान के अनुसार शान्ति के समय व्यापार और युद्ध के समय राजनीतिक सफलता के लिए समुद्र पर जिसका नियन्त्रण होगा । वह विजयी होगा । महान ने कोलम्बिया युग (1892 से 19वीं सदी तक) के समान ही 20वीं सदी में भी सामुदिक शक्ति की श्रेष्ठता को स्वीकार किया था । इसके विपरीत मैकिन्डर ने 'ह्रदय स्थल सिद्धान्त' के माध्यम से यह प्रतिपादित करने का सफल प्रयास किया कि सामुदिक शक्ति के दिन बीत चुके है और अब स्थलीय शक्तियां ही विश्व में अपना प्रभुत्व स्थापित कर सकेगी ।

ब्रिटेन में विश्वविद्यालय स्तर पर आधुनिक भूगोल का श्रीगणेशः मैकिन्डर के प्रयासों से ही हुआ । उन्होंने देश के विभिन्न भागों में नवीन भूगोल पर कई व्याख्यान दिये । जिससे प्रभावित होकर 'रायल ज्योग्राफिकल सोसायटी' ने उन्हें भूगोल पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया । सोसायटी के सम्मुख उनका व्याख्यान 'भूगोल की अध्ययन पद्धति और विषय क्षेत्र' पर था। इस व्याख्यान में भूगोल को परिभाषित करते हुए उन्होंने कहा 'The science whose main function is to trace the interation man in society and so much of his inuvironment as varies localty. अर्थात् भूगोल वह विज्ञान है जिसका मुख्य कार्य मनुष्य का समाज और स्थानीय रूप से विभिन्नता दर्शाने वाले वातावरण के मध्य अन्तःक्रिया का पता (Trace) लगाना है।

सामाजिक मनुष्य समाज और वातावरण दोनों से अन्तःक्रिया करता है। चूंकि वातावरण स्थानीय रूप से भिन्नता दर्शाता है। अतः मनुष्य का समायोजन न केवल वातावरणीय विशेषताओं पर निर्भर करता है बल्कि वह सामाजिक विरासत से भी प्रभावित होता है । कोई मानव समुदाय जब कही जाता है तो अपने साथ तकनीकी ज्ञान, मूल्यबोध, अभिरूचि, दक्षता, कुशलता आदि सब कुछ लेकर जाता है । जब वह पर्यावरण से अभिक्रिया करता है तो उसमें सामाजिक–सांस्कृतिक विशेषतायें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । इसीलिए तो भूगोल के विषय क्षेत्र के सम्बन्ध में मैकिन्डर कहते हैं कि भूगोल कहां, क्यों और कैसे का अध्ययन करता है ।

अतः स्पष्ट होता है कि मैकिन्डर ब्रिटेन में आधुनिक भूगोल की आधार शिला रखी । इन्होंने जितना योगदान दिया है उतना अन्य किसी ने नहीं किया है । ए. जे.हरवर्टसन (1865–1915) हरवर्टसन ब्रिटेन में आधुनिक भूगोल के विकास में अमूल्य योगदान किया है । ये अपनी अल्पायु में मृत्यु के समय तक ब्रिटेन में भूगोल के शिल्पियों में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना चुके थे । भूगोल का आधुनिक स्वरूप उनके जीवन काल में ही उमड़ने लगा था । इनकी शिक्षा फ्राईवुर्ग एडिनवर्ग, पेरिस न मोन्टेपिलर में हुई थी । यद्यपि इन्होंने छात्र–जीवन में गणित, भौतिकी और ऋतु विज्ञान का अध्ययन किया था किन्तु अध्यापकीय जीवन राजनीति और वाणिज्य भूगोल के प्रवक्ता के रूप में शुरू की । आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में अध्यापक (1899) होने के पहले ये कुछ समय तक 1891 में मैनचेस्टर में वनस्पति विज्ञान के प्रशिक्षक के रूप में भी कार्य किया । 1917 में भूगोल संघ (Geographical Association) ने उनके स्मृति में व्याख्यान माला का आयोजन करके उन्हें अमर बना दिया ।

इस अवसर पर इनके भौगोलिक कार्यों को प्रकाशित करने की भी योजना थी जो संभव न हो सका । आगे चलकर 1965 में ई.डब्लू.गिलवर्ट ने हरबर्टसन के कार्यो की भूरि–भूरि प्रशंसा की । 1915 में इनकी आकस्मिक मृत्यु हुई थी ।

कृतियां– हरवर्टसन जहां एक ओर उच्चस्तरीय भूगोल की पुस्तकें लिखी । वहीं स्कूल स्तर के छात्रों व

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

अध्यापकों के लिए भी महत्वपूर्ण पुस्तकों का लेखन किया जो स्कूल भी महत्वपूर्ण माना जाता है। उनकी प्रमुख भौगोलिक कृतियां निम्न है–

1892-American Life 1898-An Ilestrated school geographjy 1899-Atlas of Metrology 1899-Commercial Geography of British Islands. 1899-Man and Hiswosic-An Introduction to human Geography. 1901-Out lines Physioglophy : An Introduction to the Study the Earth. 1903-Commercial Geography of the world owtside the British Isles. 1905-Junior Geography 1905-Prekiminary Geography 1907-Seniar Geography 1910-Physiographical Introsuction to Geography 1911-iland Book of Geography 1913-Natural Resins-A Systematic Approach in Geography.

संकल्पना– हरबर्टसन की शिक्षा फ्रांस और जर्मनी दोनों देशों में हुई थी । अतः वे वहां के भौगोलिक चिन्तन से भली–भांति परिचित थे । वह ब्लाश के भी समर्थक थे और जर्मनी के रिटर के प्रादेशिक विभाजन से भी प्रभावित थे। रिटर ने विश्व को पर्वत, पठार, निम्नभूमि आदि प्राकृतिक तत्वों के आधार पर विभाजित किया था । इनके अनुसार प्रत्येक क्षेत्र तत्वों का जटिल समायोजन होता है । संभवतः इसी से प्रेरित होकर हरबर्टसन भी विश्व को प्राकृति प्रदेशों में विभाजित किया ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1 रामनरेश बिरले भौगोकि चिन्तन का विकास पृ0 सं0 325
2. डॉ0 चतुर्भुज मामोरिया एवं वी.एल. शर्मा
3. एस. डी0 कौशिक मानव भूगोल रस्तोगी पब्लिकेशन मेरठ पृ0सं0 65

*****